The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भुंजिया जनजाति में लाल बंगला (कीचन): उत्पत्ति एवं नामकरण

डॉ. सफक्कत अली

अतिथि व्याख्याता समाजशास्त्र, शासकीय नवीन महाविद्यालय पेंड्रावन जिला दुर्ग (छ.ग.)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 17-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:

भारत ,संस्कृति ,आदिवासी , भुंजिया जनजाति

ABSTRACT

भारतीय समाज विभिन्न प्रकार की विविधताओं से परिपूर्ण समाज है, इन्हीं विभिन्न संस्कृतियों से मिलकर इस विशाल राष्ट्र का निर्माण संभव हो पाया है, जहां अनेकों प्रकार के धर्म और जाति/जनजाति के लोग निवासरत् है। समुचैं विश्व में आफ्रीका के पश्चात् जनजातीय दृष्टिकोण से भारत का ही नाम प्रमुखता से लिया जाता है यहां जनजातीय बहुतायत में निवास करते हैं। जनजतीयों को मुख्यधारा से जोड़ने एवं उनके विकास हेतु नित-नयें प्रयास किये जा रहें है। सरकार ने अनेक स्तरों में विकास कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय विकास की योजना बनाई है इन विभिन्न योजनाओं में जनजातियों की कुछ विशेष प्रकार की संस्कृति भी है जिसे संरक्षण की दृष्टि से भी सरकारें नवीन योजनाओं का क्रियावन्यन कर रही है इनमें से तों कुछ ऐसी संस्कृति भी है जिससे आम जन मानस अनभिज्ञ है, आम लोगों को भी इनकी इस विशेष संस्कृति से भी अवगत कराना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से समाज को इस विशेष जनजाति की संस्कृति से परिचित कराने का प्रयास किया जायेगा।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15663499

प्रस्तावनाः-

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण समाज है जो कि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में बंटा हुआ है। ये क्षेत्र अपनी विशेषताओं के कारण अलग पहचान रखते हैं। सामान्यतया इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के रहन-सहन, कला, भाषा, साहित्य इत्यादि में भिन्नता पाई जाती है इन भिन्नताओं के आधार पर हम भारत की जनता को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथम वर्ग में वे लोग आते हैं जो सुविधाओं से परिपूर्ण है और शीर्ष स्थान पर है। द्वितीय वर्ग में वे लोग हैं जो सुविधाओं से परिपूर्ण न होते हुए भी अपने अधिकारों को पाने में सक्षम हैं। तीसरा वर्ग वह जो कि समाज में सबसे निम्न स्थिति में होते हुए भी मूलभूत सुविधाओं के अभाव में जीवन व्यतीत कर रहा है। इस तीसरे वर्ग में एक विशिष्ट वर्ग है आदिवासी समाज, भारत वास्तव में अनेक

विविधताओं वाला देश है जहां विभिन्न प्रकार के समुदाय के लोग निवास करते हैं जिनकी अपनी पृथक संस्कृतिए पृथक विश्वास एवं आस्थाएँ है। इन समुदायों में से एक आदिवासी समुदायए जिसकी हमारे देश की आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर में विशिष्ट भूमिका रही है (Rajput, 2010)

इन्हीं आदिवासियों में से एक है, छ.ग. की भुंजिया जनजाति, जिसकी सर्वाधिक जनसंख्या गरियाबंद, धमतरी एवं महासमुंद जिले में है। उक्त जिलों के कुल 138 ग्रामों मे 2130 भुंजिया परिवार निवास करते है। जनगणना 2011 के अनुसार भुंजिया जनजाति की कुल जनसंख्या 10603 है, जिसमें पुरुष जनसंख्या 5225 तथा महिला जनसंख्या 5378 है। भुंजिया जनजाति में स्त्री-पुरुष लिंगानुपात 1029 है। (https://cgtrti.gov.in/hi/bhunjia, n.d.) अत्यंत कम जनसंख्या होने के कारण विशेष पिछड़ी जनजाति का दर्जा प्राप्त है। यह अपनी विविधता के कारण एक विशिष्ट पहचान रखती है।

अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्वः-

प्रस्तावित अध्ययन भुंजिया जनजाति के कीचन रांधाघर की उत्पत्ति तथा नामकरण विषय पर आधारित है प्राचीन काल से ही भारत में जनजातियों का अस्तित्व रहा है इनकी विशेष संस्कृति एवं नैसर्गिक जीवन ने हमें सदैव ही उनकी ओर आकर्षित किया है प्रस्तुत अध्ययन में यह बताने का प्रयास किया गया है कि भुंजिया जनजाति में एक विशेष परंपरा जो कि उनके रांधाघर से संबंधित है, को जाानने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण अध्ययन कहा जावेगा।

भुंजिया जनजाति का परिचय

छत्तीसगढ़ जनजातिय बहुल प्रदेश माना जाता है। यहां प्रदेश की 30 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या जनजातियों की है (Russell & Hiralal , 1975.) जबकि यह प्रदेश आर्थिक- सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा माना जाता है । छत्तीसगढ़ मे लगभग 40 जनजातियां एवं उपसमूह विभिन्न भागों में निवास करती है। भुंजिया जनजाति द्रविडियन प्रजाति का एक छोटा समूह है, भुंजिया जनजाति एक अल्पतम जनजाति है भुंजिया जनजाति का अर्थ होता है भूंजकर खाने वाला। प्राचीन काल में अकाल या समयाभाव की स्थिति के फलस्वरुप इन विशिष्ट जनजाति द्वारा भोजन को भुंजकर खाये जाने के कारण इनका नाम भुंजिया पड़ा (Sonwani, 2010)। इनकी उत्पत्ति गोड़ो से हुई है। भुंजिया तीन प्रकार के होते है, खल्लारी, चिण्डा, चौखुटिया। गोड़ों की तरह भुंजिया के भी गोत्र मरकाम, नेताम, आदि होते है। इनके घर कच्ची मिट्टी, लकड़ी खपरों और पेड़ की छाल की रस्सीयों, कोदों पैरें आदि के बने होते हैं। घरों की छत घास-फूस की बनी होती है। प्रत्येक घर की परछी (बरामदा) में ढेकी (धान से भूसा अलग करने का यंत्र) अवश्य होती है घर बहुत साफ एवं स्वच्छ होते है । (Naiyar, Khatoon , & Nagesh, 2014)

लाल बंगला का नामकरण एवं उत्पत्ति का इतिहास

भुंजिया जनजातियों की एक अनूठी परंपरा आज भी कायम है, यह परंपरा है लाल-बंगला । लाल बंगला निवास क्षेत्र में मुख्य आवास के बाहर एक विशेष प्रकार की झोपड़ी बनायी जाती है । उस झोपड़ी को लाल रंग किया जाता है और लाल रंग होने के कारण इसे लाल-बंगला नाम दिया गया है। जिसके निर्माण में लकड़ी, मिट्टी, घास, बोदल पत्ता इत्यादि का उपयोग किया जाता है, इस झोपड़ी में लकड़ी या मिट्टी से दीवार का निर्माण किया जाता है। जिस पर मिट्टी का लेप लगाया जाता है, तथा

उपर से लाल रंग का लेप भी चढ़ाया जाता है । इसकी छत निर्माण हेतु लकड़ी एवं घास या बोदल पत्ता का उपयोग किया जाता है। यह लाल-बंगला भुंजिया जनजाति का अत्यंत पवित्र स्थान माना जाता है। इसके सामने ही यह जनजाति बुढ़ादेव का निर्माण करती है । अतः इस झोपड़ी को घेरे से बाड़ बनाकर बहारी व्यक्तियों से दूर रखते है।

प्राचीन काल से ही जनजातीय समाज स्तर में बहुत छुआछुत रही है। भुंजिया जनजाति में लाल बंगला प्रथा में किसी भी गैर पारिवारिक व्यक्ति के छू देने से उस झोपड़ी को उखाड़ कर फेंक देने की प्रथा है। प्राचीन समय में लाल-बंगला के निर्माण में झोपड़ी के छत के निर्माण हेतु बोदल पत्ता, जंगली घास, लकड़ी तथा दिवार के निर्माण में कोरई नामक एक लकड़ी जो कि कर्रा वृक्ष से प्राप्त होती है। उसी से दिवार रूपी घेरा किया जाता था और उस पर मिट्टी की छबाई की जाती थी। और अंत में उस दिवार को लाल रंग से पुताई किया जाता था। कर्रा वृक्ष की छोटी-छोटी डंठेलियों को स्थानीय भाषा में कोरई कहते है जिसे गुथकर दिवार का निर्माण किया जाता था। परंतु वर्तमान में समय एवं परिवेश के साथ-साथ लाल बंगला निर्माण में भी परिवर्तन दिखाई देने लगा वर्तमान में इस झोपड़ी की छत के निर्माण में घास-फूस, लकड़ी, एवं झिल्ली का भी इस्तेमाल निर्माण हेतु किया जाता है, साथ ही झोपड़ी की दिवार के निर्माण हेतु मिट्टी का प्रयोग होने लगा है। इस बंगले की पोताई-रंगाई प्रमुख त्यौहारों जैसेः- दशहरा, दीपावली, रोटी-खानी, नवाखाई, फागुन मास में किया जाता है।

लाल-बंगला निर्माण का इतिहासः-

त्रेतायुग में भगवान राम वनवास में वन भ्रमण के दौरान चित्रकुट पहुंच गए थे, चित्रकुट में राम द्वारा दो झोपड़ी का निर्माण किया गया एक कुटिया का निर्माण जिसे पर्ण कुटिया कहा गया यह पर्ण कुटिया ही उनका रांधाघर था, जिसके सामने एक और कुटिया का निर्माण किया जो कि उस पर्ण कुटिया से कुछ बड़ी बनाया गया। वही समीप में में एक भुंजिया परिवार भी निवास करता था। इस भुंजिया परिवार की भोजन सामाग्री में कंद-मूल, कडु कांदा, मीठ कांदा इन सब भोजन सामाग्री को इस परिवार के द्वारा भगवान राम को भोजन रूप में प्रस्तुत किया जाता था, उसी दौरान सीता हरण हेतु रावण यही आया था, जब रावण भिक्षु का वेश धारण करके सीता के समक्ष आया था, तब सीता लक्ष्मण के द्वारा खींची की तीन रेखा के जो की उस कुटिया को घेरा किये हुए थे, उसे पार करके भिक्षा देने हेतु गयी थी तत्पश्चात् भिक्षु रूपी रावण के द्वारा सीता का हरण कर लिया गया और जब राम और लक्ष्मण जब वापस कुटिया की ओर आये तो सीता को ना पाकर उन्होनें वहीं समीप में निवासरत् भुंजिया परिवार के भुंजिया पुरूष को बुलाकर पूछा और कहा कि आप हमारी मदद कीजिए सीता को खोजने में तब लक्ष्मण ने कहा कि जब आप हमारे साथ चले जायेगें तो आपके परिवार की स्त्री की रखवाली कौन करेगा, अतः उनकी सुरक्षा हेतु आप अपने परिवार की स्त्री को इस कुटिया में रहने दीजिए, जिससे इनकी सुरक्षा हो सके तब उस भुंजिया पुरूष की पत्नी लक्ष्मण द्वारा सुरक्षित की गई उस कुटिया में निवास करने लगी ताकि वह सुरक्षित रह सके और जब राम लक्ष्मण और भुंजिया युवक वन में खोज के आने के बाद जब सीता नहीं मिली तब राम और लक्ष्मण किसी अन्य दिशा में प्रस्थान से पहले उस भुंजिया युवक को कहा की आज से तुम इस कुटिया में ही निवास करो अब हम यहां वापस नहीं आएगें तब से उस भुंजिया परिवार के द्वारा उस रेखांकित की गई कुटिया को पवित्र माना जाने लगा और राधांघर के रूप में प्रयोग किया जाने लगा, और जैसे लक्ष्मण ने तीन रेखा के द्वारा उस कुटिया को सुरक्षित किया था उसी प्रकार भुंजिया परिवार के द्वारा लाल बंगला को तीन

लकड़ी के घेरे से सुरक्षित किया जाता है। यह तीन लकड़ी का घेरा, लक्ष्मण द्वारा खींची गई सुरक्षा रेखा का प्रतीक है। यदि किसी व्यक्ति के द्वारा इस लाल बंगला को छु दिया जाता है। तो उसे नष्ट कर दिया जाता है। और नवीन कुटिया का निर्माण किया जाता है। इस कुटिया के समीप एक और कुटिया जिसे भुंजिया समाज के देवता का घर कहा जाता है, उसे भी लाल मिट्टी से पोता जाता है, यह कुटिया भी प्रत्येक चौखुटिया भुंजिया के घर में मिलती है, इस देवता घर में डुमर पिता की पूजा की जाती है इसके साथ-साथ प्रमुख बुढ़ा देवता की पूजा भी घर में ब्यारे में की जाती है। बुढ़ा देवता की प्रमुख पूजा भुंजिया समाज के राजा जो कि कोदोपाली ग्राम मे निवास करता है उनके घर में होती है, बुढ़ादेव भुंजिया समाज का राष्ट्रीय देवता है उसे पूरा समाज पूजनीय मानता है उनकी पूजा विशेष तौर में दशहरा जात्रा के समय होती है।

भुंजिया समाज की तीन संतान है, जो कि चौखुटिया भुंजिया, चिण्डा भुंजिया, और खल्लारी भुंजिया है जिसमें चौखुटिया भुंजिया और खल्लारी भुंजिया में ही लाल बंगला रूपी रांधाघर पाया जाता है, जबकि चिण्डा भुंजिया में यह प्रथा नहीं है।

लाल-बंगला के अंदर कोई विशेष पुजा नही होती है, उसे सिर्फ रांधाघर के रूप में ही उपयोग किया जाता है, भुंजिया समाज में हिन्दु समाज के जैसे पितर पक्ष नही मनाया जाता है, इस समाज में बारोमास मनाया जाता है जिसमें प्रत्येक दिन चढ़ावा दिया जाता है प्रत्येक दिन भोजन पकने के बाद जो बुजुर्ग गुजर गये है उनके नाम से पके हुए भोजन से कुछ अन्न के दाने तर्पण किये जाते है। लाल बंगला के निर्माण में यह ध्यान रखा जाता है कि उसे ज्यादा बड़ा ना बनाया जाये।

लाल बंगला के भीतर में सिर्फ बर्तन एवं थाली रखा जाता है वहां सिर्फ भोजन पकाया जाता है, अन्न भंडारण घर में कोठी में किया जाता है, जब भोजन पकाना होता है तभी अन्न ले जाया जाता है वहां बैठकर भोजन ग्रहण भी नहीं किया जाता है, भोजन ग्रहण अलग से ब्यारे या परछी में किया जाता है,

लाल बंगले का नामकरणः-

चुकि इस झोपड़ी के निर्माण के पश्चात्, झोपड़ी की दिवार पर लाल रंग का लेप लगाया जाता है, प्राचीनकाल में सर्वप्रथम इस झोपड़ी के निर्माण के पश्चात् इसकी दिवार में चढ़ा रंग अत्यधिक लाल रंग का था जिसे स्थानीय भाषा में बूंग;अत्यधिकद्ध लाल कहा गया परंतु सही उच्चारण न होने के कारण इस बूंग-लाल को बंग-लाल शब्द से उच्चारित किया गया तत्पश्चात् इसे लाल बंगला नाम से पुकारा जाने लगा, इसी वजह से इस झोपड़ी को लाल बंगला नाम से पुकारा जाने लगा।

लाल-बंगला और विवाह संबंधी निषेधः-

इस रांधाघर की विशेषता यह है कि इसे किसी भी बहारी व्यक्ति को छुने नहीं दिया जाता है, अगर इस परिवार की पुत्री का जब विवाह हो रहा है, और उस लड़की की बारात जैसे ही गांव प्रवेश करती है और उन्हें जनवासा दे दिया तो अब वह इस परिवार की सदस्य नही रही , पुत्री की उसी वक्त से परिवार की सदस्यता समाप्त हो जाती है इसलिए वह इस रांधाघर को स्पर्श नही कर सकती है। उसी छण से उस लड़की का लाल बंगला में प्रवेश वर्जित हो जाता है, अतएव विवाह पश्चात् जब वह पुत्री अपने मायके आती है तो इस राधाघर का उपयोग नहीं करती है क्योंकि वह अब इस परिवार की सदस्य नहीं रही

और न ही इसे स्पर्श करती है और अपने लिए अलग से घर के ब्यारे (आंगन) में भोजन निर्माण करती है, और यदि कुछ समान अपने उपयोग हेतु मंगवाना भी होता है, तो सिर्फ कुंवारें लड़कों से ही मंगवाती है।

निष्कर्ष:-

अध्ययनगत जनजाति के रांधाघर (कीचन) जिसे की लाल बंगला के नाम से संबोधित किया जाता है, इस जनजाति की एक विशेष संस्कृति को बताता है, समस्त भुंजिया परिवारों में आज भी अपनी इस विशेष परंपरा को संजों के रखें हुए है आज आधुनिकीकरण के इस दौर में भी आधुनिकता से परेय अपनी इस विशेष संस्कृति को यह समाज में उसी स्थान के साथ ले के चल रही है आज भी अपने इस लाल बंगला को वे उतना ही पवित्र मानते है जितना की प्राचीन समय में था आज भी वे उन सभी निषेधों का पालन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करते है जो इस बात का प्रतीक है कि वे अपनी संस्कृति एवं उसकी पवित्रता को उसी प्रकार से रखना चाहते है जैसा कि प्राचीन समय से चले आ रहा है

भुंजिया जनजाति का लाल बंगला (रांधाघर)

भुंजिया पुरुष एवं लाल बंगला (रांधाघर)

संदर्भ सूची

- *https://cgtrti.gov.in/hi/bhunjia*. (n.d.).
- Naiyar, S., Khatoon , A., & Nagesh, J. (2014). Chhattishgarh Sandarbh. Raipur: Jansampark Sanchanalaya Chhattishgarh.
- Rajput, U. (2010). *Aadivasi Vikas Evam Gair Sarkari Sangathan.* New Delhi: Rawat Publication.
- Russell, R., & Hiralal , R. (1975.). Tribes and caste of central provinces of India. In *Tribes and caste of central provinces of India.* London: Macmillan & co.Limited.
- Sonwani, T. (2010). Aadhunikikaran Evam Bhunjia Janjati Nirantarta Evam Parivartan Ka Aadhayan. Raipur.